The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

19. डिजिटल दौर में स्थानीय समाचारपत्रों की स्थिति का अध्ययन

नरेंद्र कुमार
शोधार्थी
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

डॉ. ऋषिकेश कुमार गौतम
सहायक प्राध्यापक
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
माधव विश्वविद्यालय, पिंडवाड़ा

शोध सार

समाचार पत्र को संचार का एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता है। भारत में पहला अखबार सन 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 'बंगाल गजट' के नाम से प्रकाशित किया था। इसके बाद कई बाधाओं को पार करते हुए समाचार पत्र लगातार नए सोपान में विकसित होते चले गए। भारत में समाचार पत्रों की यात्रा 240 वर्षों से अधिक की हो गई है। प्रस्तुत शोध आलेख में द्वितीयक आंकड़ों के माध्यमों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल मीडिया के आने के बाद स्थानीय समाचारपत्रों की स्थिति क्या है? डिजिटल मीडिया ने स्थानीय समाचारपत्रों के प्रसार, पाठकों की संख्या और आर्थिक स्थिति पर कितना प्रभाव डाला है? क्योंकि पिछले कुछ सालों में अन्य परंपरागत संचार माध्यमों पर के साथ समाचार पत्रों पर भी डिजिटल माध्यम भारी पड़ता नजर आ रहा है।

बीज शब्द : स्थानीय समाचार पत्र, डिजिटल मीडिया, इंटरनेट।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। तकनीक की विकास यात्रा ने इटंरनेट की सविुधा को मोबाइल फोन तक पहुंचा दिया है। आज बैंकिग से लेकर शॉपिंक सभी ऑनलाइन हो गई हैं। एक क्लिक ने विश्व को अपने में समाहित कर लिया है। मीडिया में बात अगर समाचार पत्रों की करें तो समाचारपत्र 24 घंटे में एक बार प्रकाशित होता है और उसमें सीमित स्थान होता है| जिससे तमाम जरूरी खबरें या तो छूट जाती हैं या फिर संक्षेप में प्रकाशित हो पाती हैं। ऐसे में जब

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

न्यू मीडिया का विस्तार तेजी से हो रहा है तो समात्रार पत्र-पत्रिकाओ के लिए बहुत सी चनुौतियां उपज रही हैं जो इनकी प्रसंगिकता पर बड़ा प्रश्न चिह लगाती हैं। हालांकि प्रारंभिक दौर से ही डिजिटल मीडिया की शुरुआत के साथ ही अखबार भी डिजिटल होना प्रारंभ हो गए लेकिन शुरुआत में यह संख्या बेहद कम थी। चूंकि उस समय तक डिजिटल मीडिया की असल ताकत का अहसास शायद कुछ लोगों को ही था। ज्यादातर लोगों का यही मत था कि डिजिटल मीडिया समाचार पत्रों की पठनीयता को किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं करेगा। समय के साथ डिजिटल मीडिया का विस्तार होता गया और कई देशों में मुद्रित समाचार पत्रों के प्रसार की संख्या को प्रभावित किया।

डिजिटल युग में स्थानीय समाचारपत्र अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए भारी दबाव में हैं, लेकिन वे अप्रासंगिक नहीं हुए हैं। वे प्रिंट से डिजिटल में सामंजन (वेबसाइट/ऐप), सोशल मीडिया पर सक्रियता और सामुदायिक मुद्दों पर केंद्रित रहकर अपना अस्तित्व बचा रहे हैं। हालाँकि, वे तेजी से सोशल मीडिया से मिल रही कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं। डिजिटल युग में स्थानीय समाचारपत्र (Local Newspapers) अस्तित्व के संकट और बड़े रूपांतरण के दौर से गुजर रहे हैं। प्रिंट की घटती पाठक संख्या और विज्ञापन राजस्व की ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों (सोशल मीडिया, ऐप्स) की ओर शिफ्ट के कारण, कई स्थानीय अखबार बंद हो रहे हैं या उनका प्रकाशन कम हो रहा है, लेकिन वे डिजिटल संस्करण अपनाकर अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं।

डिजिटल युग में बड़े और छोटे समाचार पत्रों की रणनीतियाँ भले ही अलग हों, लेकिन उनकी मूल चिंता एक ही है—पत्रकारिता की विश्वसनीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व। बड़े समाचार समूहों ने डिजिटल मीडिया के साथ तालमेल बिठाने के लिए सुव्यवस्थित और बहुस्तरीय रणनीतियाँ अपनाई हैं। उन्होंने डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म, सोशल मीडिया, वीडियो कंटेंट और डेटा आधारित पत्रकारिता को अपने ढांचे में शामिल करते हुए अपने पाठक और विज्ञापन आधार को बनाए रखने का प्रयास किया है। इसके विपरीत, छोटे और क्षेत्रीय अख़बारों ने संसाधनों की सीमाओं के बावजूद अपनी स्थानीय पहचान, जनसरोकारों और पाठकों से सीधे जुड़ाव को अपनी सबसे बड़ी ताकत के रूप में विकसित किया है।

यह भी देखा गया कि डिजिटल मीडिया ने जहां समाचारों की गति को अभूतपूर्व रूप से तेज़ किया है, वहीं इससे सत्यापन, गुणवत्ता और गहराई के स्तर पर गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसे में अख़बारों के सामने केवल प्रतिस्पर्धा की नहीं, बल्कि अपनी साख बनाए रखने की भी बड़ी जिम्मेदारी है। अधिकांश संपादकों और मीडिया

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

पेशेवरों ने इस बात पर सहमति जताई कि नवाचार, तकनीकी अनुकूलन और निरंतर सीखना अब विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुका है। कुछ अन्य चुनौतियां इस प्रकार है -

प्रतिस्पर्धा और अस्तित्व - सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म के कारण पाठकों की संख्या में गिरावट आई है, जिससे स्थानीय अखबारों पर अस्तित्व का संकट पैदा हो गया है।

आय का साधन - विज्ञापनों का एक बड़ा हिस्सा डिजिटल मीडिया की ओर जा रहा है, जो प्रिंट मीडिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। इससे राजस्व में भारी गिरावट आई है। प्रिंट विज्ञापन की दरें ज्यादा होने और डिजिटल पर विज्ञापन की दरें बहुत कम होने से भी आर्थिक दबाव बढ़ा है।

तात्कालिकता - वेब और सोशल मीडिया लगातार बदलते रहते हैं, जबकि समाचार पत्र केवल एक ही दिन में अपडेट होते हैं, जो प्रतिस्पर्धा में पीछे रह सकते हैं।

विश्वसनीयता का मुद्दा - सोशल मीडिया पर तेजी से फैलती गलत सूचनाओं और फेक न्यूज (Fake News) के कारण पारंपरिक स्थानीय अखबारों की विश्वसनीयता के सामने चुनौती है।

बंद होते अखबार - वित्तीय दबाव के कारण, विशेष रूप से छोटे शहरों में, स्थानीय पत्रकारिता में गिरावट आई है और कई अखबार बंद हो गए हैं।

बावजूद इसके स्थानीय समाचारत्रों की प्रांसांगिकता को पूरी तरह से नकारा नहीं जा सकता। आज भी माना जाता है कि डिजिटल प्लेटफॉर्म पर समाचार पढ़ने की तुलना में अखबार पढ़ना आंखों के लिए कहीं अधिक सुकूनदायक है। स्थानीय समाचार पत्रों का लोगों के साथ जुड़ाव और विश्वसनीयता और समाज में इसकी गहरी जड़ें भी बहुत प्रभावी साबित हो रही हैं। कुल मिलाकर, स्थानीय समाचारपत्र डिजिटल दुनिया के साथ तालमेल बिठाकर, प्रिंट के साथ डिजिटल माध्यम को अपनाकर, एक मिश्रित रूप से अपनी प्रासंगिकता को बचाए हुए हैं, जो कि पारंपरिक मीडिया की खूबियों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की लचीलेपन के साथ जोड़ता है। इसके कुछ अन्य कारण इस प्रकार हैं -

सामुदायिक जुड़ाव - अब संकट के दौर में अस्तित्व बचाने के लिए, अखबार अब केवल स्थानीय खबरों, सामुदायिक मुद्दों और जमीनी पत्रकारिता पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। वैसे भी स्थानीय अखबार सामुदायिक मुद्दों, जैसे स्कूल, स्थानीय खेल और घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करके पाठकों को जोड़े रखते हैं।

विश्वास और सटीकता - डिजिटल दौर में जहाँ फेक न्यूज की बाढ़ है, स्थानीय समाचार पत्र अभी भी अपनी विश्वसनीयता के कारण पाठकों का भरोसा कायम रखे हुए हैं।

गहन विश्लेषण - स्थानीय अखबारों में समाचारों का अधिक विश्लेषण किया जाता है, जिससे पाठकों को विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

व्यापार विकास - स्थानीय कंपनियां अभी भी समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर अपने लक्षित ग्राहकों तक पहुँच सकती हैं।

आगे की रणनीतियां :-

डिजिटल रूपांतरण - समाचारपत्र अब अपनी खबरों को ऑनलाइन वेबसाइटों और सोशल मीडिया (Facebook, Twitter) पर अपडेट करके पाठकों तक तेजी से पहुंच रहे हैं। लगभग सभी समाचार पत्रों ने अब अपने ई-संस्करण (E-papers), वेबसाइट और ऐप्स लॉन्च कर दिए हैं, जिससे खबरें तत्काल पाठकों तक पहुँच रही हैं।

सब्सक्रिप्शन मॉडल - विज्ञापनों पर निर्भरता कम करने के लिए, डिजिटल संस्करणों के लिए सब्सक्रिप्शन मॉडल को भी अपनाया जा रहा है।

साफ है कि भविष्य में प्रिंट और डिजिटल दोनों माध्यमों के बीच एक सहयोगात्मक और पूरक संबंध स्थापित होगा। जहां डिजिटल प्लेटफॉर्म त्वरित सूचना और व्यापक पहुंच प्रदान करेंगे, वहीं क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया एक गहरी, विश्वसनीय और समृद्ध पत्रकारिता का स्तम्भ बनेगा। क्षेत्रीय मीडिया के बिना हम समाज के सूक्ष्म पहलुओं को समझ नहीं सकते, जो सीधे देश के विकास और सामाजिक न्याय से जुड़े हैं। इस दिशा में क्षेत्रीय मीडिया की मजबूती के बिना प्रिंट के अस्तित्व की कल्पना करना भी कठिन है। क्षेत्रीय मीडिया की मजबूती आज के मीडिया परिदृश्य में प्रिंट माध्यम के विकास के लिए अनिवार्य हो गई है। इसके बिना समूचे देश के विविध और व्यापक सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को समझना और प्रस्तुत करना मुश्किल हो जाता है। क्षेत्रीय अखबार न केवल उन खबरों को प्रकाशित करते हैं, जिनका राष्ट्रीय या डिजिटल मीडिया में कम ध्यान रहता है, बल्कि वे सीधे उन समुदायों के दिल और सोच से जुड़ते हैं, जिनकी आवाज अक्सर छूट जाती है। ग्रामीण और पिछड़े इलाकों से जुड़ी खबरें, जो बड़े शहरी केंद्रों के मीडिया से दूर रह जाती हैं, क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया की जागरूकता और प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डिजिटल दौर में स्थानीय समाचारपत्रों का भविष्य "अनुकूलन" पर निर्भर है। जो अखबार केवल कागज़ तक सीमित हैं, वे लुप्त हो रहे हैं, जबकि जो अपनी गुणवत्तापूर्ण स्थानीय रिपोर्टिंग को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर मजबूती से ले जा रहे हैं, वे अपनी जगह बना रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. कुमुद शर्मा, भूमंडलीकरण और मीडिया, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली
2. राबर्ट मैक्चेस्ने, द ग्लोबल मीडिया, न्यू मिशनरीज ऑफ कारपोरेट कैपिटलिज्म
3. कुमुद शर्मा, भूमंडलीकरण और मीडिया, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

4. मार्क टुली, गूगल डॉट काम
5. प्रभात खबर, ई पेपर, 13 जून 2009, पटना
6. अरविंद मोहन, पत्रकारिता, पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली
7. डा. नंद किशोर त्रिखा, प्रेस विधि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. मीडिया विमर्श, सित. 2013
9. कुमुद शर्मा, भूमंडलीकरण और मीडिया, ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली, पेज 149
10. डी.डी. बसु, भारत का संविधान, वाधवा एंड कं., नई दिल्ली, 1999
11. मीडिया विमर्श, जन.-मार्च, 2011
12. हस्तक्षेप डाट काम 24.11.2011
13. परंजय गुहा ठकुरता, लेख, पेड न्यूज हाउ करप्शन इन इंडिया अंडरमाइन डेमोक्रेसी, 10 मार्च 2010
14. Tripathi, R. (2021). Audience engagement and digital expansion of Hindi print media. Journal of Media Economics (India), 6(1), 29–45.
15. Verma, K. (2022). Mobile news consumption and its impact on Hindi print readership. Journal of Digital Communication, 4(2), 88–103.
16. World Press Trends. (2013). World Press Trends Report 2013. WAN-IFRA.
17. Yadav, A. (2018). डिजिटल युग में अखबारों की प्रासंगिकता (शोध प्रबंध). CCSHAU, हिसार।
18. amarujala.com
19. hindustantimes.com
20. jagran.com
21. amarujala.com
22. livehindustan.com
23. आर्गनाइजर, 2 फरवरी 2014, में लेख crime soaring in cyber India
24. पिच मेडिसन मीडिया एडवरटाइजिंग आउटलुक 2011